4

प्रमुख राजनीतिक सिद्धांत

इस पाठ में आप प्रमुख राजनीतिक सिद्धांतों – उदारवाद, मार्क्सवाद और गांधीवाद के विषय में जानेंगे। उदारवाद और मार्क्सवाद ने बीसवीं सदी में विश्व के अनेक भागों के लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। उदारवाद का उदय ज्ञानोदय, इंग्लैण्ड की गौरवमयी क्रांति, अमरीका के स्वतंत्रता युद्ध और फ्रांस की क्रांति से हुआ। यह पश्चिम के पूँजीवाद के राजनीतिक दर्शन के रूप में चल रहा है। मार्क्सवाद का उदय उदारवाद–पूंजीवादी समाज के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। 1991 में अन्तिम प्रमुख समाजवादी/मार्क्सवादी देश सोवियत रूस के विघटन के साथ मार्क्सवाद की अधिकांश लोकप्रियता समाप्त हो गई। जबकि गांधीवाद, उदारवाद और मार्क्सवाद दोनों विचारधाराओं को चुनौती देते हुए न केवल दोनों विचारधाराओं की आलोचना प्रस्तुत करता है अपितु एक प्रासंगिक वैकल्पिक विचारधारा और सिद्धांत भी प्रस्तुत करता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- उदारवाद का अर्थ और उसकी विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- मार्क्सवाद के आधारभूत सिद्धांतों की पहचान कर सकेंगे;
- द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग–संघर्ष का सिद्धांत, क्रांति, सर्वहारा की तानाशाही और वर्गविहीन समाज के सिद्धांतों का वर्णन कर सकेंगे;
- मार्क्सवाद में लेनिन और माओ के योगदान को जान पाएंगे;
- मार्क्सवाद की प्रासंगिकता का विश्लेषण कर सकेंगे;
- राज्य, विकेन्द्रीकरण, लोकतंत्र, स्वदेशी, ट्रस्टीशिप, कुटीर लघु उद्योग, इत्यादि पर गांधी के विचारों की व्याख्या कर सकेंगे;
- स्वराज, सत्याग्रह एवं अहिंसा पर गांधी के विचारों पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- नस्ल पर आधारित भेदभाव के विरोध एवं हरिजनों और दलितों के उत्थान के लिए गांधी के जीवन पर्यन्त प्रयासों की व्याख्या कर सकेंगे।

टिप्पणी

4.1 उदारवाद

उदारवाद एक काफी पुरानी राजनीतिक विचारधारा है। इसकी जड़ों को 16वीं शताब्दी में खोजा जा सकता है। उसके बाद से यह कई चरणों से गुजर चुका है। पश्चिमी ज्ञानोदय ने नैतिक मूल्यों को निरपेक्ष सत्य नहीं माना और इंग्लैण्ड की गौरवमयी क्रांति (1688) ने राजाओं के दैवीय अधिकारों की भर्त्सना की।

फ्रांस की क्रांति ने स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के मूलभूत विचार दिए और इससे थोड़ा पहले अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (1775-76) ने मानव अधिकारों की घोषणा पर बल दिया।

4.1.1 उदारवाद का अर्थ

राजनीति विज्ञान के अंग्रेज विद्वान **हेराल्ड लास्की** ने एक बार लिखा ''उदारवाद का वर्णन करना आसान नहीं है और इसे परिभाषित करना तो और भी कठिन है क्योंकि यह सिद्धांतों का समूह नहीं अपितु दिमाग की आदत है।'' इस का अर्थ यह है कि उदारवाद इतनी गतिशील और इतनी लचीली अवधारणा है कि इसका कोई सूक्ष्म अर्थ नहीं दिया जा सकता''। फिर भी विद्वानों ने इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। **सारटोरी** के अनुसार ''बहुत सरल ढंग से उदारवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता, न्यायिक सुरक्षा और संवैधानिक राज्य का सिद्धांत और व्यवहार है।'' **कोयर्नर** के अनुसार ''उदारवाद का प्रारम्भ और अंत व्यक्तिगत स्वतंत्रता, व्यक्ति के मानव अधिकारों और व्यक्तिगत मानवीय प्रसन्नता के साथ होता है।'' **इनसाईक्लोपीडिया ब्रिटानिका** उदारवाद को इस प्रकार परिभाषित करता है-''उदारवाद स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता का विचार, सरकार में एक नीति और प्रक्रिया, समाज में संगठन का एक सिद्धांत और व्यक्ति तथा समुदाय के लिए जीवन का एक ढंग है।''

उदारवाद सुधारों का एक सिद्धांत है क्योंकि यह आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सुधार के प्रति समर्पित रहा है। यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता, व्यक्तिगत स्वायत्तता का सिद्धांत है, क्योंकि इसने मानव व्यक्तित्व के विकास के पक्ष में तर्क दिए हैं। यह लोकतंत्र का सिद्धांत है क्योंकि यह संवैधानिक सरकार, लोगों की सहमति पर आधारित सरकार, कानून का शासन, विकेन्द्रीकरण, और निष्पक्ष चुनाव पर बल देता है। हम उदारवाद के तीन पक्षों को रेखांकित कर सकते हैं जो इसके अर्थ को समझने में हमारी स्पष्ट सहायता करते हैं। सामाजिक क्षेत्र में उदारवाद धर्मनिरपेक्षता का तथा एक ऐसे समाज का समर्थन करता है जो सभी प्रकार के सामाजिक भेदभाव का विरोध करता है। आर्थिक क्षेत्र में यह पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व और अधिकतम लाभ कमाने का पक्ष लेता है। राजनीतिक क्षेत्र में यह लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था, व्यक्तिगत अधिकार और स्वतंत्रताओं, अनुक्रियाशील और उत्तरदायी सरकार, स्वतंत्र और निष्पक्ष न्याय-व्यवस्था, इत्यादि का समर्थन करता है।

4.1.2 उदारवाद की विशेषता

हम उदारवाद के कुछ गुणों को पहचान सकते हैं। ये विशिष्ट विशेषताएं इस प्रकार हैं:

(1) व्यक्तिगत स्वतंत्रता: उदारवाद अनिवार्य रूप से स्वतंत्रता का सिद्धांत है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति इसके प्रेम पर कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता। यह स्वतत्रंतावाद बन चुका है। उदारवादियों के लिए स्वतंत्रता मनुष्य के व्यक्तित्व का सार है। यह व्यक्ति के विकास का एक साधन है।

(2) व्यक्तिकेन्द्रित सिद्धांत : उदारवाद का प्रारम्भ और अंत व्यक्ति के साथ होता है। उदारवादियों के लिए व्यक्ति सभी गतिविधियों का केन्द्र है। व्यक्ति साध्य है जबकि राज्य सहित अन्य सभी संस्थाएं साधन हैं जो व्यक्ति के लिए ही हैं।; व्यक्ति केन्द्र है जिसके इर्द-गिर्द सब चीजें घूमती हैं।

(3) पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था : उदारवाद मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था की वकालत करता है अर्थात पूंजीवादी अर्थव्यवस्था। यह निजी सम्पत्ति की व्यवस्था में विश्वास करता है, सम्पति के अधिकार को अति पावन और अधिकतम लाभ को एकमात्र लक्ष्य, उत्पादन और वितरण की पूंजीवाद प्रकार के सार तत्व तथा बाजार की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने का साधन मानता है।

(4) सीमित राज्य : उदारवाद सीमित राज्य के सिद्धांत की वकालत करता है। उदारवादी राज्य को व्यक्ति की भलाई का एक साधन मानते हैं। वे प्रत्येक प्रकार के सर्वशक्तिमान राज्य का विरोध करते हैं। उनका विचार है कि राज्य जितना अधिक शक्तिशाली होगा, व्यक्ति उतना कम स्वतंत्र होगा। **लॉक** प्राय: कहा करता था ''क्योंकि राज्य के कार्य सीमित हैं, इसलिए इसकी शक्तियां भी सीमित हैं।''

(5) परम्पराओं/अन्धविश्वासों का विरोध : उदारवाद का उदय परम्पराओं और अंधविश्वासों के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ था, इसलिए यह स्वाभाविक रूप से सभी प्रकार के प्रतिक्रियावादी उपायों के विरुद्ध है। पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार से प्रकट हुआ उदारवाद तर्क और विवेकशीलता का समर्थक रहा है। मनुष्य के सामंती प्रतिरूप में निष्क्रिय होने के विपरीत उदारवाद ऐसे प्रतिरूप का समर्थक है, जो अधिक सक्रिय एवं सर्जनात्मक हों।

(6) लोकतंत्र : उदारवाद लोकतांत्रिक सरकार का प्रतिपादक है। यह ऐसी सरकार स्थापित करना चाहता हैं जो लोगों की, लोगों के द्वारा और लोगों के लिए हो। एक ऐसी सरकार जो संविधान और संविधानवाद के अनुसार काम करे, जो कानून के शासन को प्रोत्साहित करे और लोगों के अधिकार और स्वतंत्रताओं की रक्षा करे। **मैकगर्वन** का कथन है कि उदारवाद लोकतंत्र और व्यक्तिवाद का मिश्रण है।

(7) लोक कल्याणवाद : उदारवाद लोक कल्याणवाद से निकटता से जुड़ा हुआ है। राज्य की लोक गतिविधि के रूप में कल्याणवाद का विचार है कि राज्य लोगों के कल्याण के लिए कार्य करता है। राज्य की गतिविधियों की उदारवादी अवधारणा यह है कि राज्य लोगों की सेवा करता है। दूसरे शब्दों में कल्याणकारी राज्य एक समाजसेवी राज्य है।

4.1.3 उदारवाद की कमजोरियाँ

उदारवाद की कुछ अन्तर्निहित त्रुटियां हैं। यह तनावों से भरा हुआ दर्शन है। एक तरफ तो यह स्वतंत्रता का ध्वज फहराता है और दूसरी तरफ समानता की बात करता है। एक तरफ तो यह बाजार आधारित समाज के ढाँचे में काम करता है तो दूसरी तरफ सबको समान अवसरों का वादा करता है। एक तरफ तो यह सम्पत्ति ग्रहण करने के असीमित अधिकारों की मांग करता है तो दूसरी ओर यह जरूरतमंदों और बेरोजगार लोगों के कल्याण के लिए लाभ में से कुछ हिस्सा मांगता है। एक तरफ तो यह पूंजीवादी अर्थव्यवस्था निर्मित करता है जो अन्तत: असमानता की ओर ले जाती है और दूसरी तरफ यह समतावादी समाज की स्थापना का प्रयास करता है।

पाठगत प्रश्न 4.1

रिक्त स्थान भरिए

(क) ज्ञानोदय ने नैतिक लक्ष्यों को .... सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया।

(ख) फ्रांसीसी क्रांति ने .... समानता और भाईचारे को महान राजनीतिक मूल्य घोषित किया।

(ग) 17वीं और 18वीं सदी के .... को ऋणात्मक उदारवाद भी कहते हैं।

(घ) **मैकगर्वन** ने कहा कि उदारवाद दो तत्वों से मिलकर बना हुआ है: लोकतंत्र और ....

(ङ) उदारवादी अर्थव्यवस्था.................अर्थव्यवस्था है।

(च) उदारवादी राज्य एक सामाजिक .... राज्य है।

(छ) उदारवाद .... वर्ग का राजनीतिक दर्शन है।

4.2 मार्क्सवाद

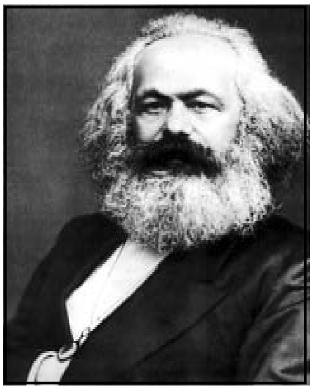

कार्ल मार्क्स
(1818 – 1883)

17वीं और 18वीं सदी के दौरान पश्चिमी देशों में कारखानों की स्थापना तथा पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था के परिणामस्वरूप मजदूरों की दशा बिगड़ने लगी। कारखानों में प्रवेश पाने वाले मजदूरों का सब प्रकार से शोषण हुआ–काम के लम्बे घण्टे, गंदी बस्तियों में जीवन और कमजोर एवं खराब स्वास्थ्य, इत्यादि। इसका परिणाम हुआ मजदूरों का शोषण, अमीर और गरीब में निरंतर बढ़ता अंतर, आर्थिक असमानताएं, अवनति और अलगाव। **कार्ल मार्क्स** और **फ्रेडरिक एंजिल्स** ने पूंजीवाद के दुष्प्रभावों को स्पष्ट रूप से अनुभव किया और इस प्रक्रिया में वैज्ञानिक समाजवाद या मार्क्सवाद (मार्क्स के नाम पर) को ले आए। मार्क्सवादी दर्शन में **मार्क्स** और **एंजिल्स** के बाद योगदान देने वालों में इनके अतिरिक्त **वी.आई. लेनिन** (रूस) और **माओ** (चीन) सम्मिलित हैं। अलगाववाद का अर्थ है अकेलापन, विरक्ति, उदासीनता, संबंध-विच्छेद। मार्क्सवाद में अलगाववाद का अर्थ है, व्यक्ति अपने आपको अपने क्रियाकलापों और स्वयं से अलग-थलग पाता है।

4.2.1 मार्क्सवाद और इसके मूल सिद्धांत

मार्क्सवाद मज़दूर वर्ग का राजनीतिक दर्शन है जैसे उदारवाद पूंजीवाद वर्ग का राजनीतिक दर्शन है। यह सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत है। सामाजिक परिवर्तन क्यों होते हैं और किस प्रकार ये परिवर्तन प्रभाव में आते हैं। सामाजिक परिवर्तन भौतिक कारकों के कारण होते हैं और ऐसे तरीके से होते हैं जिसे द्वंद्वात्मक भौतिकवाद कहते हैं। मार्क्सवाद की मूल अवधारणाएँ इस प्रकार हैं:

(1) दुनिया में कुछ भी अपने आप नहीं होता। हम अपने चारों ओर जो कुछ भी देखते हैं उसमें कारण और प्रभाव का संबंध होता है। उत्पादन के संबंध (लोगों के बीच भौतिक संबंध) समाज के आधार के रूप में कारण प्रदान करते हैं जबकि उत्पादक की ताकतें प्रभाव का निर्माण करती हैं।

(2) वास्तविक विकास सदैव भौतिक विकास होता है अर्थात् आर्थिक विकास। उत्पादक ताकतों का प्रगतिशील विकास, विकास के प्रगतिशील स्तर की ओर संकेत करता है।

(3) भौतिक (आर्थिक) घटक व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन दोनों में ही प्रमुख घटक है।

(4) मनुष्य सामाजिक/भौतिक विकास की विशेष अवस्था में पैदा होता है अर्थात एक ऐसी सामाजिक स्थिति में जो उसके स्वतंत्र अस्तित्व में है। परंतु सक्रिय होने के कारण मनुष्य अपनी सामाजिक स्थिति स्वयं निर्मित करता है। **मार्क्स** ने कहा था कि मनुष्य इतिहास में पैदा होता है, परंतु वह इतिहास बनाता है।

टिप्पणी

(5) सामाजिक वर्ग विशेष रूप से विरोधी वर्ग अपने संघर्ष के माध्यम से तथा क्रांति की प्रक्रिया का अनुसरण करके आगे की ओर बढ़ता है। इसी कारण मार्क्सवादी कहते हैं कि प्रत्येक आने वाला समाज पिछले समाज से बेहतर होता है।

(6) क्रांतियों का अर्थ है पूर्णरूपेण और समग्र परिवर्तन। वे नकारात्मक ताकत नहीं है परंतु जैसा कि मार्क्स ने कहा कि वे इतिहास के इंजन हैं। जब क्रांतियां की जाएं और सफल हो जाएं तो क्रांतियाँ समाज को विकास की उच्चतर अवस्था में ले जाती हैं।

(7) वर्ग समाज का परिणाम होने के कारण राज्य एक वर्ग संस्था है। यह न तो निष्पक्ष है और न ही न्यायपूर्ण। यह एक वर्ग संस्था है। यह पक्षपात पूर्ण, दमनकारी और शोषणकारी संस्था है। यह प्रभुत्वशाली वर्ग की सेवा के लिए अस्तित्व में है और उस वर्ग का यह हथियार है। पूंजीवादी समाज में पूंजीवादी राज्य पूंजीवादियों के हितों की रक्षा और उन्हें प्रोत्साहित करता है जबकि समाजवादी समाज में यह कामगार समाज के हितों की रक्षा उनका एवं प्रोत्साहन करता है। समय के साथ जब समाजवादी समाज पूरी तरह साम्यवादी हो जाएगा, तब राज्य स्वत: विलुप्त हो जाएगा।

> मार्क्सवादियों के अनुसार, राज्य के स्वत: विलुप्त हो जाने का अर्थ है राज्य का गायब हो जाना अर्थात धीरे-धीरे और क्रमश: राज्य का ढाँचा पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगा।

''इस प्रकार मार्क्सवाद साम्यवाद समाज के उच्चतम रूप की वकालत करता है जहां मनुष्य अपनी इच्छा से काम करेगा और अपनी आवश्यकता से प्राप्त करेगा; अर्थात ''प्रत्येक को उसकी योग्यता के अनुसार, और प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त होगा।''

4.2.2 मार्क्सवाद की विशेषताएँ

मार्क्सवाद निम्नलिखित सैद्धांतिक विचारों के इर्द-गिर्द घूमता है। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद उन सब सामान्य सिद्धांतों का कुल योग है जो यह स्पष्ट करते हैं कि सामाजिक परिवर्तन क्यों और कैसे होते हैं। सामाजिक परिवर्तन भौतिक घटकों के कारण और द्वंद्वात्मक भौतिकवादी प्रक्रिया के माध्यम से होते हैं। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद प्रक्रिया त्रिस्तरीय प्रक्रिया है। **मार्क्स** के अनुसार:

उत्पादन के सम्बंध किसी भी समय पर समाज का आधार होते हैं। जिन्हें लोगों के बीच सामाजिक संबंध कहा जाता है, मार्क्सवादियों के लिए वे उत्पादन के संबंध हैं।

उत्पादन की शक्तियाँ वे तत्व होती हैं जो उत्पादन के संबंधों से उत्पन्न होती हैं, परंतु ये संबंधों के विरुद्ध होने के बावजूद नई विधियों के माध्यम से अधिक उत्पादन का वायदा करती हैं।

बहुत सरल शब्दों में, मार्क्सवादी सिद्धांत कहता है कि सारा विकास विरोधियों के बीच संघर्ष के कारण होता है और उन कारणों से होता है जो आर्थिक हैं।

> **उत्पादन की नयी** पद्धति उत्पादन के संबंधों और अपने विकास की परिपक्व अवस्था में उत्पादक की शक्तियों के बीच संघर्ष का परिणाम है। उत्पादन की नयी पद्धति में उत्पादन के संबंधों और उत्पादक ताकतों दोनों के गुण हैं, इसलिए आर्थिक विकास की यह उच्चतर अवस्था है।

ऐतिहासिक भौतिकवाद को इतिहास की आर्थिक/भौतिकवादी/निर्धारणवादी व्याख्या भी कहते हैं। इतिहास की मार्क्सवादी व्याख्या यह है कि यह (इतिहास) उत्पादन की शक्तियों के आत्म विकास का रिकार्ड है; कि समाज आर्थिक/भौतिक विकास के पक्ष पर चलता रहता है। विकास की प्रत्येक अवस्था प्राप्त किए गए विकास के स्तर का संकेत देती है कि इतिहास अनेक सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं का इतिहास है। प्रारम्भिक साम्यवादी, दास रखने, सामंतवादी पूंजीवाद और उसके बाद संक्रमणीय समाजवाद जिसके बाद

टिप्पणी

साम्यवादी समाज जो कि प्रत्येक उत्तरोत्तर समाज अपने से पिछले समाज से बेहतर होता है कि समाजवादी समाज पूंजीवादी समाज के समाप्त होने के बाद वर्गविहीन समाज होगा। परंतु सर्वहारा की तानाशाही के रूप में साम्यवादी समाज, जो समाजवादी समाज का अनुसरण करता है, वर्गविहीन समाज और राज्यविहीन समाज, दोनों होगा।

अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत मार्क्सवाद की एक अन्य विशेषता है। **मार्क्स** कहता है कि मजदूर/कामगार वस्तु को उत्पादित करते समय उसमें मूल्य निर्मित करता है। लेकिन उसे वह नहीं मिलता जिसका वह उत्पादन करता है; उसे केवल वेतन मिलता है और वेतन से ऊपर जो कुछ होता है वह मालिक ले जाता है। यह अतिरिक्त मूल्य है। अतिरिक्त मूल्य श्रमिक द्वारा उत्पादित मूल्य और उसे प्राप्त होने वाले वेतन के बीच का अंतर है। सरल शब्दों में मजदूर को वेतन प्राप्त होता है और मालिक को लाभ। यह अतिरिक्त मूल्य धनी को और धनी और निर्धन को और निर्धन बनाता है। अतिरिक्त मूल्य के दम पर ही पूँजीपति पनपते हैं।

वर्ग संघर्ष का सिद्धांत मार्क्सवाद का एक अन्य सिद्धांत है। मार्क्सवादियों के विचार में आज तक का इतिहास विरोधी वर्गों के बीच वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। वर्ग संघर्ष वर्ग समाजों की विशेषता है। वर्गहीन समाजों में कोई वर्ग संघर्ष नहीं होते हैं क्योंकि ऐसे समाजों में कोई विरोधी वर्ग नहीं होते हैं। वर्ग समाजों (दास रखने वाले समाज, सामंतवादी समाज, पूंजीवादी समाज) में वर्ग संघर्ष मुख्यत: तीन प्रकार का होता है: आर्थिक, सैद्धांतिक, राजनीतिक। मार्क्सवाद क्रांति की पैरवी करता है। मार्क्सवादी कहते हैं कि क्रांतियां इतिहास का इंजन होती हैं। क्रांतियां तब होती हैं जब उत्पादन के संबंधों का उत्पादन की ताकतों के साथ संघर्ष होता है जो उत्पादन की नई पद्धति की ओर ले जाता है। वह समाज में पूर्ण परिवर्तन लाती है। यदि संभव हो तो बिना हिंसा के और यदि आवश्यक हो तो हिंसा से भी। क्रांतियां परिवर्तन की सूचक हैं- पूर्णरूपेण परिवर्तन, समग्र परिवर्तन, एक समाज के मूल चरित्र में परिवर्तन। वे सामाजिक विकास की उच्चतर अवस्था के आगमन की द्योतक हैं। अत: मार्क्सवादी क्रांति को एक सकारात्मक घटना मानते हैं।

सर्वहारा की तानाशाही का अर्थ है कामगार वर्ग का शासन। यह पूंजीवादी समाज के बाद आने वाले समाजवादी समाज में कामगारों का राज्य है। समाजवादी समाज में सर्वहारा की तानाशाही उसी भाव में है जैसे पूंजीवादी समाज में पूंजीपतियों की तानाशाही होती है। वहां पूंजीपति अपनी इच्छानुसार शासन करते हैं और यहां कामगार कामगारों की इच्छानुसार शासन करते हैं। इस पर भी **मार्क्स** स्पष्ट करता है कि सर्वहारा की तानाशाही, कामगारों का राज्य, पूंजीवादी समाज और साम्यवादी समाज के बीच अंतरिम अथवा परिवर्ती प्रबंध के रूप में कार्य करता है। एक बार समाजवादी समाज की स्थापना हो जाने के बाद कामगारों के राज्य की कोई आवश्यकता नहीं होगी अर्थात यह धीरे-धीरे विलुप्त हो जाएगा। **लेनिन** का आग्रह था कि बुर्जुआ राज्य से सर्वहारा की तानाशाही गुणात्मक और संख्यात्मक दोनों ही स्तरों पर बेहतर है; क्योंकि यह मुठ्ठी भर पूंजीपतियों के बजाय बेशुमार कामगारों के हितों और कल्याण की देखभाल करता है।

पूंजीवादी समाज के बाद आने वाले समाजवादी समाज की समाप्ति के बाद एक वर्गहीन समाज की स्थापना होती है। यह इस अर्थ में वर्गहीन समाज है कि सभी कामगार भले ही जहां भी काम करते हों-कार्यालय में, कारखाने में, खेतों में, प्रत्येक अपनी योग्यतानुसार काम/नौकरी प्राप्त करता है। अर्थात प्रत्येक को उसकी योग्यता अनुसार और प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार काम मिलता है। समाजवाद समाज के बाद आने वाला साम्यवादी समाज वर्गहीन और राज्यविहीन समाज, दोनों ही होगा।

4.2.3 मार्क्सवाद की प्रासंगिकता

मार्क्सवाद ने एक दर्शन और एक व्यवहार के रूप में सामाजिक और राजनीतिक चिन्तन में एक अद्वितीय स्थान प्राप्त कर लिया है। इसका आकर्षण सभी सीमाओं को और वास्तव में सभी कमियों को पार करता है। इसके विरोधी भी इससे उतने ही आश्वस्त हैं जितने इसके प्रशंसक हैं। फिर भी इसकी कमियां प्रत्यक्ष हैं। परिवर्तन केवल विरोधी वर्गों के बीच संघर्षों के कारण ही नहीं होते। इतिहास अपने विकास के लिए भी वर्ग सहयोग का ऋणी है। भौतिक घटक कितने ही महत्वपूर्ण और मुखर हों, परंतु वे समाज की जटिलताओं की व्याख्या करने वाले घटक नहीं हैं। वास्तव में मनुष्य केवल रोटी के लिए ही जीवित नहीं

रहता, परंतु यह भी सत्य है कि वह इसके बिना भी जीवित नहीं रह सकता। मार्क्सवाद ने राष्ट्रीय भावनाओं/देशभक्ति की ताकत और कीमत को कम करके आंका है। कामगारों का कोई अपना पितृदेश नहीं होता, जैसा कि **मार्क्स** कहा करते थे कि उन्हें अभिभावक रहित बनाना है। मार्क्सवाद ने राज्य के महत्व को भी कम करके आंका है। यह कहना कि राज्य वर्ग संस्था है इसलिए दमनकारी और शोषण करने वाला है, यह कथन इसे अति सरल करना है।

मार्क्सवाद की अवधारणाओं ने वास्तव में निराश किया है। कारण चाहे कुछ भी हों परंतु व्यवहार में मार्क्सवाद असफल हुआ है। एक मुख्य कारण इसके केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति है। सर्वहारा की तानाशाही साम्यवादी पार्टी की तानाशाही बन जाती है। पार्टी की तानाशाही अन्तत: एक व्यक्ति की तानाशाही बन जाती है चाहे वह **स्टालिन** हो या फिर **माओ**। सोवियत संघ में **मिखा़यल गोर्बाचोव** द्वारा प्रारम्भ किए गए सुधार आंदोलन ने (विशेष रूप से ग्लासनोस्ट) न केवल यूरोप में ही अपितु लगभग पूरे विश्व से साम्यवादी आंदोलन के अंत का प्रारम्भ कर दिया। साम्यवादी चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था और शासन व्यवस्था में अनेक उदारवादी कदम उठाए हैं। एक वैकल्पिक विचारधारा के रूप में विश्व के सामने मार्क्सवाद की प्रासंगिकता अब प्रश्नों से अछूती नहीं है।

पाठगत प्रश्न 4.2

रिक्त स्थान भरिए

(क) मार्क्सवाद ....विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है। (सामान्यवाद/पूंजीवाद)

(ख) मार्क्सवाद को.................................वर्ग का राजनीतिक दर्शन माना जाता है। (कामगार, पूंजीपति)

(ग) मार्क्सवादियों के लिए ....कारक व्यक्तिगत, सामाजिक जीवन के निर्णायक कारक हैं। (समाज, पूंजीवाद)

(घ) मार्क्सवादी योजना में उत्पादन के संबंध ....की.............को जन्म देते हैं। (उत्पादन, शक्ति/ वाद, संवाद)

(ङ) 'प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार और प्रत्येक को उसकी.......................के अनुसार' यह समाजवाद का सार-संक्षेप है। (आवश्यकता, कार्य)

(च) मार्क्स के लिए क्रांतियां इतिहास का .... हैं (इन्जिन, साध्य)

4.3 गांधीवाद

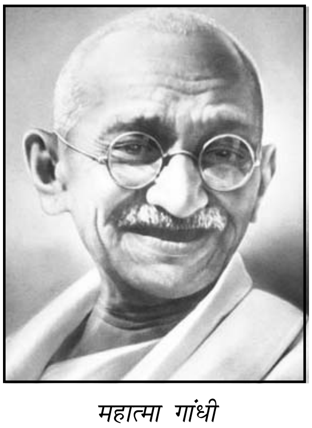

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी (1869-1948) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के सर्वोच्च नेता थे जिन्होंने 1917 से 1947 तक लगभग 30 वर्ष इसका नेतृत्व किया। वह एक चितंक थे और उन्होंने अपने समय की अधिकांश मान्यताओं और सिद्धांतों को चुनौती दी तथा उनके स्थान पर संभव और युक्तियुक्त विकल्प भी प्रदान किए।

गांधी जी मार्क्सवादियों में उदारवादी थे और उदारवादियों में मार्क्सवादी। वे व्यक्तिवादियों में एक लोकतांत्रिक थे और समाजवादियों में व्यक्तिवादी। वे यथार्थवादियों में आदर्शवादी थे और आदर्शवादियों में

टिप्पणी

यथार्थवादी। उन्होंने अपने आप में सभी पूर्व और वर्तमान विचारधाराओं की अच्छी बातों को समाहित कर लिया था।

4.3.1 पश्चिमी सभ्यता के आलोचक के रूप में गांधी

गांधी जी पश्चिमी सभ्यता के आलोचक थे। पश्चिमी सभ्यता के विरुद्ध उनकी शिकायत थी कि यह अध्यात्मवाद के सार को नष्ट करता है। वे मनुष्य के पाश्चात्य रूप को एक **परमाणिक** व्यक्ति मानते हैं जो हाड़मांस से तो बना है परंतु जिसमें आत्मा नाम की चीज नहीं है। पश्चिम में प्रचलित राज्य के मुकाबले गांधी जी ने रामराज्य की वकालत की। चीजों के पश्चिमी ढंग से केन्द्रीकरण के माध्यम से प्रबंधन के मुकाबले वह विकेन्द्रीकरण के समर्थक थे। भौतिकवाद, औद्योगिकीकरण और पूंजीवाद के विरुद्ध उन्होंने स्वदेशी, कुटीर उद्योग और ट्रस्टीशिप के सिद्धांत के पक्ष में सशक्त विचार दिए।

4.3.2 राज्य, विकेन्द्रीकरण, कुटीर उद्योग, ट्रस्टीशिप

गांधी जी उस प्रकार के राज्य के प्रशंसक नहीं हैं जो पश्चिम में प्रचलित है। उनके लिए पश्चिमी राज्य सघन रूप में हिंसा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आत्मा रहित मशीन की तरह हैं। इसके विपरीत गांधी जी ने एक अराजकतावादी दार्शनिक के रूप में राज्य को स्वीकार तो किया परंतु बहुत अनिच्छा से और केवल तब जब इसकी अत्यंत आवश्यकता हो।

अराजकतवादी प्रत्येक प्रकार के राज्य के विरुद्ध होता है; अराजकतावाद राज्य रहित, सरकार रहित और कानून रहित, विधि विहीन सिद्धांत है।

गांधीवाद अहिंसक राज्य का समर्थक है जो (i) लोगों की सहमति (ii) समाज में लगभग एकता पर आधारित है। गांधी जी ने राजनीतिक और आर्थिक दोनों रूपों में सत्ता के विकेन्द्रीकरण की वकालत की। गांधीवादी लोकतंत्र की भावना विकेन्द्रीकरण की भावना है। विकेन्द्रीकरण का अर्थ है शक्ति का प्रत्येक स्तर पर हस्तांतरण जो व्यक्ति/स्थानीय इकाई से प्रारम्भ होकर शिखर तक जाती है। गांधी जी के अनुसार विकेन्द्रीकरण का सारतत्व यह है कि सभी शक्तियां नीचे से ऊपर की ओर आरोही क्रम में चलती हैं।

इस विचार से गांधीवादी पद्धति में राजनीतिक शक्ति व्यक्तियों में निहित होती है जो सभी गतिविधियों के केन्द्र स्वराज के उद्‌गम होते हैं। व्यक्ति से शक्ति/सत्ता गांव को स्थानान्तरित होती है, गांव से सत्ता उच्चतर इकाई को जाती है और केन्द्र/राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच कर समाप्त होती है। अत: जो एक व्यक्ति द्वारा नहीं होता अथवा नहीं किया जा सकता उसे गांव करता है; जो गांव द्वारा नहीं किया जा सकता उसे स्थानीय/क्षेत्रीय सरकार करती है; और जिसे क्षेत्रीय/प्रांतीय सरकार नहीं कर सकती, उसे केन्द्रीय/राष्ट्रीय सरकार करती है। गांधी जी के राम राज्य की आत्मा यही है कि यह एक आत्म-नियंत्रक व्यवस्था है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपना शासक स्वयं है और अपने पड़ोसी के लिए बाधा नहीं है। गांधी जी के विकेन्द्रीकरण का एक आर्थिक पक्ष है। उन्होंने आर्थिक शक्ति के विकेन्द्रीकरण के लिए भी कहा। उन्होंने ग्राम लघु कुटीर उद्योगों के प्रोत्साहन के माध्यम से ग्राम अर्थव्यवस्था की वकालत की। वास्तव में वह आत्मनिर्भर ग्राम अर्थव्यवस्था चाहते थे। स्वदेशी का सिद्धांत/अवधारणा वह भावना है जो हमसे अपने बिल्कुल निकट के पड़ोसी की सेवा करने की अपेक्षा रखती है तथा बहुर दूर उत्पादित हुई वस्तुओं की तुलना में पड़ोस में उत्पादित वस्तुओं का प्रयोग करने को कहती है। गांधी जी ने देशी उद्योगों के पुनर्जीवन का पक्ष लिया ताकि लोगों को खाने के लिए पर्याप्त मिल सके। उनके विचार में ऐसी कोई भी अर्थव्यवस्था जो लोगों का शोषण करती है तथा धन सम्पत्ति को कुछ ही हाथों में केन्द्रित होने में सहायता करती है, वह निंदनीय है।

गांधी जी का ट्रस्टीशिप का सिद्धांत अद्वितीय है। यह इसलिए अद्वितीय है कि इसका लक्ष्य पूंजी और श्रम

के बीच मधुर संबंध स्थापित करना है। सारी सम्पत्ति को पूरे समुदाय की सम्पत्ति घोषित कर के गांधी जी ने पैरवी की कि रोजगार देने वाले सब लोग (उद्योगपति, पूंजीपति आदि) अपनी सम्पत्ति के ट्रस्टी हैं। इसके अनुसार उन्हें केवल उतने पैसे पर अधिकार है जिससे उनकी आवश्यकताएं पूरी होती हैं जैसे अन्य कर्मचारियों को हैं (मजदूरों इत्यादि को)। गांधी जी के लिए कोई एक व्यक्ति स्वामी/मालिक नहीं है; सभी काम करते हैं और सभी कामगार हैं। प्रत्येक व्यक्ति को सेवा के बदले में कुछ मिलता है, लाभ पर मालिक का अधिकार नहीं है अपितु यह समुदाय का है। रोजगार देने वाले ट्रस्टी हैं न कि स्वामी; कर्मचारी उद्यम के आवश्यक अंग हैं अर्थात वे कामगार है न कि दास।

4.3.3 साध्य और साधन

गांधी जी के अनुसार साध्य और साधन एक ही वास्तविकता के दो पक्ष हैं– एक ही सिक्के के दो पहलू। इससे एक जैविक पूर्णता निर्मित होती है। ''साध्य साधनों से ही बनते हैं, जैसे साधन होगें वैसा ही साध्य होगा''। उन्होंने कहा कि साधन बीज की तरह होते हैं और साध्य वृक्ष की तरह और दोनों में वैसा ही अलंघनीय संबंध है जैसा कि बीज और वृक्ष में है। उनका कहना था कि राज्य अपने आदर्श चरित्र को तब तक नहीं प्राप्त कर सकता जब तक साधनों पर हिंसा के दाग हैं। इसी कारण उन्होंने साध्य की प्राप्ति के लिए सदैव साधनों की पवित्रता पर बल दिया। अशुद्ध/अपवित्र साधनों से पवित्र/पावन लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकते। उन्होंने एक बार कहा था कि ''मैं स्वराज को भी स्वीकार नहीं करूंगा यदि यह रक्तपात के माध्यम से आता है'' और फिर कहा ''मेरे लिए स्वराज से पहले अहिंसा है''। दोनों के बीच इतना गहरा संबंध है कि यदि कोई साधनों का ध्यान रखता है तो साध्य स्वयं अपना ध्यान रखेंगे। इससे आगे गांधी जी के लिए लक्ष्यों की प्राप्ति साधनों के अनुपात में ही होगी।

गांधी जी कोई **मैक्यावली** नहीं थे। **मैक्यावली** के अनुसार साध्य ही साधनों को न्यायोचित ठहराते हैं लेकिन गांधी जी के लिए साधन ही साध्यों को न्यायोचित ठहराते हैं।

4.3.4 समाज और सर्वोदय

गांधीवाद मात्र राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म और रणनीति का सिद्धांत ही नहीं है अपितु समाज का सिद्धांत भी है। गांधी जी का पूरा सामाजिक दर्शन समानता का दर्शन है। समानता निरपेक्ष समानता की दृष्टि से नहीं परंतु इसलिए कि सभी मानव समान हैं। गांधी जी के अनुसार समानता पर आधारित समाज प्रत्येक प्रकार के आधार पर जाति, नस्ल, वर्ग, लिंग, वंश के भेदभाव को नकारता है। हम मानव के रूप में पैदा हुए हैं न कि हिन्दू अथवा मुसलमान। हम मानव के रूप में पैदा हुए हैं न कि उच्च जाति अथवा दलित के रूप में। गांधी जी ने प्रत्येक प्रकार की भेदभाव वाली प्रवृत्तियों और प्रवाहों का विरोध किया। उनके लिए केवल एक ही वर्ग, एक ही धर्म और एक जाति थी और वह थी मानवता। इसलिए उन्होंने किसी भी भेदभाव को स्वीकार नहीं किया। वास्तव में वे कमजोर के कल्याण के पक्षधर थे। पुरुषों की तुलना में महिलाओं के कल्याण, समाज के कमजोर वर्गों, हरिजनों, दलितों के कल्याण के पक्षधर थे। ऐसा नहीं था कि वे 'अ' को वंचित करके 'ब' को देना चाहते थे अपितु वे 'ब' को अधिक देना चाहते थे ताकि 'अ' की ऊंचाई को वह प्राप्त कर सके। उन्होंने समानता की वकालत की ताकि लोगों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक श्रेणीक्रम में बराबरी पर लाया जा सके। उनकी समानता की अवधारणा खाई को पाटने, दूरियों को कम करने का लक्ष्य रखती थी न कि उनमें दूरी बढ़ाने का।

गांधी जी की सर्वोदय की अवधारणा उनके सपनों के समाज पर उनके विचारों को प्रस्तुत करती है। गांधी जी की कल्पना के अनुसार सर्वोदय समाज के सभी सदस्यों की अधिकतम भलाई अथवा उनका कल्याण है। यह सबका कल्याण है। यह व्यक्ति का सभी व्यक्तियों के कल्याण के साथ कल्याण है। सर्वोदय में भलाई अथवा कल्याण की अवधारणा केवल भौतिक नहीं है अपितु यह अध्यात्मिक और नैतिक भी है।

पाठगत प्रश्न 4.3

निम्नलिखित का उत्तर केवल एक शब्द में दीजिए।

(क) गांधी जी ने किस प्रकार के राज्य की वकालत की थी?

(ख) मालिक और कर्मचारी के बीच संबंधों को मधुर बनाने के लिए गांधी जी किस रणनीति को प्रस्तावित करते हैं।

(ग) अनुसूचित जातियों के लोगों को गांधी जी किस नाम से सम्बोधित करते थे?

(घ) गांधी जी ने किन साधनों और साध्यों में से किसकी वकालत की।

(ङ) सभी व्यक्तियों के अधिकतम कल्याण विशेष रूप निर्धन, निर्धनों में निर्धनतम के कल्याण को गांधी जी क्या कहते थे?

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने तीन प्रमुख राजनीतिक विचारधाराओं उदारवाद, मार्क्सवाद और गांधीवाद के विषय में जाना है। अब आप यह जानते हैं कि उदारवाद एक राजनीतिक दर्शन है जो व्यक्ति की स्वाययता, संवैधानिक राज्य, उत्तरदायी सरकार, व्यक्ति के अधिकार और स्वतंत्रताएं, स्वतंत्र प्रेस, कानून का शासन, निष्पक्ष न्यायपालिका, विकेन्द्रीकरण, आदि की वकालत करता है। आप यह भी जानते हैं कि मार्क्सवादी कामगार वर्ग (श्रमिक वर्ग) का राजनीतिक दर्शन है जो समानता, सामाजिक न्याय, सभी प्रकार के शोषण की समाप्ति, प्रत्येक एवं सबके लिए रोजगार के साथ नियोजित अर्थव्यवस्था की वकालत करता है। आप यह भी जानते हैं कि गांधीवाद सत्य और अहिंसा का राजनीतिक दर्शन है– मानवता के समक्ष सभी समस्याओं का एक वैकल्पिक समाधान, विश्व की सभी प्रमुख राजनीतिक विचारधाराओं का संश्लेषण है।

पाठांत प्रश्न

1. उदारवाद का क्या अर्थ है?
2. राज्य के विलुप्त होने से आप का अभिप्राय क्या है?
3. द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की मार्क्सवाद की विशेषता के रूप में विवेचना कीजिए।
4. क्या मार्क्सवाद आज भी प्रासंगिक है? स्पष्ट करें।
5. क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि गांधीवाद पश्चिमी सभ्यता की आलोचना है?
6. गांधी जी की राम राज्य की अवधारणा क्या थी?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

(क) परम

(ख) स्वतंत्रता

(ग) उदारवाद

(घ) व्यक्तिवाद

(ङ) पूंजीवादी

(च) सेवा

(छ) पूंजीपति

4.2

(क) पूंजीवाद

(ख) कामगार

(ग) भौतिक

(घ) उत्पादन की शक्तियाँ

(ङ) कार्य।काम

(च) आवश्यकता

(छ) इन्जिन

4.3

(क) राम राज्य

(ख) ट्रस्टीशिप

(ग) हरिजन

(घ) साधन

(ङ) सर्वोदय

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. खण्ड 4.1.1 देखें
2. खण्ड 4.2.1 देखें
3. खण्ड 4.2.2 देखें
4. खण्ड 4.2.3 देखें
5. खण्ड 4.3.1 देखें
6. खण्ड 4.3.2 देखें